* श्रीहरिः *

परमात्मा जयति ।

दयानन्द लीला ।

रचयिता—

लाला जगन्नाथ जी

मुरादाबाद ।

चतुर्थवार १०००	सन् १९१८ सं० १९७४	मू०)॥ सै० ३) रु०

Printed and Published by Brahm Dev Misra at the Brahma Press-Etawah.

परमात्मा जयति ॥

दयानन्द लीला
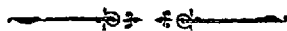
परब्रह्म परमात्माका धर ध्यान । दयानन्द लीलाकिं..
करैं विचार विद्वान् ॥ विद्वान् विचार करैं सम्यक् यहां पक्ष-
पात का काम नहीं । सचसे मिलता है स्वर्गलोक झूंठेको कहीं
विश्राम नहीं ॥ है प्यारे जी दयानन्दका अनृत लेख मैं तुमको
सुनाऊं । जो हैं विद्याहीन उन्हें फन्देसे छुडाऊं ॥ रखा नाम
सत्यार्थ जिस का सत्य का उसमें नाम नहीं । मेरे कलाम में
किसी को यारो हरगिज जाय कलाम नहीं ॥ १ ॥ सत त्रेता
द्वापर गये आये कलि महाराज । स्त्री पुरुषों से गया धर्म कर्म
ओर लाज ॥ धर्म कर्म और लाज गई पहरा कलियुगका आया
है । विद्वानों की नहीं सुने कोई अज्ञोंने शोर मचाया है ॥ मत
दयानन्दने भारतमें अपना एक नया चलाया है, वचनोंको ऋषि
और मुनियोंके उसने झूंठा ठहराया है ॥२॥ प्रथम ग्रंथ उसने
रचा जो सत्यार्थप्रकाश । बहु प्रकार उससे हुआ सत्यधर्म का
नाश ॥ हो गया नाश सद्धर्म सकल गोवध तक उसने गायाहै ।
दो पिण्ड मांसके पित्रोंको यह भी तो हुक्म लगाया है ॥ करो
मांससे होम नित्य यह वेद वचन वतलाया है । क्या धर्म सि-
खाया शिष्योंको रौरवका मार्ग दिखाया है ॥३॥ आज्ञा लिखी
नियोगकी जो कुछ श्रीमहराज । लज्जित उससे होंयगे जिन
को है कुछ लाज ॥ है लाज हृदयमें जिनके कुछ वह तो लज्जित
हो जाते हैं । निर्लज्ज समाजमें खड़ेहुए लज्जाके वचन सुनाते

हैं ॥ हे प्यारेजी मर जाये जो पति होय वा रोगी भारी। उस युवती हेतु यही मत है हितकारी ॥ हे प्यारेजी दश पुरुषों से करे भोग सुतके हित नारी। एक पुरुषसे जने पुत्र वह दो वा चारी ॥ स्वामीजी इस आज्ञा का वेदों पर दोष लगाते हैं। है बड़े अधर्मकी बात प्रकट व्यभिचार कर्म कहलाते हैं ॥४॥ गर्भवती के हृदयमें करे किलोल जो काम। किसी पुरुषसे चाहिये करे नियोग वह वाम ॥ वह वाम नियोग करे जिससे उसके हित सुत उत्पन्न करे। यह दयानन्दकी बुद्धि है दो वार उदर में गर्भ धरे॥ हे प्यारेजी देखो जरा विचार गर्भ है पहले जिसको। रहे गर्भ किस भांति दूसरेसे फिर तिसको ॥ ऐसी बातें सुनने से भी सज्जन पुरुषों का चित्त डरे। पर पुरुष संग जो करे नारी तो क्यों न पति विष खाय मरे ॥५॥ फिर स्वामीजी ने किया यही अधर्म उपदेश। धन संग्रहके हेतु जो जाय पति परदेश ॥ परदेश पतिको गये हुए जब तीन साल भी जांय गुजर। करके नियोग तब किसीसे जन पैदा करले दिलबंद पिसर ॥ शौहर जब घरपर आजाये तब छूटजाय वह यार मगर। क्या खूब हिदायत करते हैं नहीं रहा किसीका खौफो खतर॥ खौफ उनको खालिक का नहीं था। लिखा उनके दिलमें जो कुछ आया ॥ गरज हक्को वातिल से न थी कुछ। दीन अपना जैसे चला चलाया ॥६॥ ज़िनाकारी की आपने यहां तक की तालीम। हुआ न सब्र दिलको मगर किया तब तरकीम ॥ तरकीम किया स्वामीजी ने शौहर जो हो वरसरे जौरो जफ़ा। औरत को यही मुनासिब है होकर उससे फ़िलफ़ौर जुदा ॥ करके नियोग फिर किसीसे वह पैदा करले लड़की लड़का ॥

ख़ालिक बचाये इन लोगोंसे जिनको मुतलक़ नहीं शर्मो हया।
शर्म जिनके दिलमें कुछ न आई। कुबूल कीहै कैसी बेहयाई॥
हुक्म उनको देते हैं जिनका। इज़्ज़त सारी मिट्टीमें मिलाई॥७
दयानन्दकी देखिये और एक खुश तक़रीर। संस्कारविधि में
किया यह उसने तहरीर॥ तहरीर किया स्वामीजी ने मुरदेको
आग लगाओ अगर। चन्दन कपूरसे मिलाहुआ घी बीस सेर
डालो उसपर॥ हे प्यारेजी इतना हो नहीं घीव मृतकको तो
न जलाओ। जंगल में एक ठौर कहीं उसको छोड़ आओ॥
अब ख़िरदमन्द इन्साफ़ करें और समझें इसके सूदो ज़रर।
क्या करूं बयां तफसीलवार ख़ामोश ही रहना है बेहतर।
मुरदे जिस दम जंगलमें पड़ेंगे। चील कउवे ले लेकर उड़ेंगे॥
सख्त वबा फैलैगी जहांमें। मांस उनके गल २ कर सड़ेंगे॥
विद्वान् कोई स्वामी जी सा भारत में नहीं हुआ खुदसर। ये
पंथ कोई दिन रहा अगर भारत ग़ारत होगा जलकर॥ ८॥
लिखी सर्वदा के लिये मुक्ति आप सौ वार। पतित हुए निज
कर्मसे बंधन लिया विचार॥ पहले अपने सब ग्रन्थों में मुक्ति
सुख अक्षय माना है। फिर कहने लगे विपरीत बात एक दिन
वहां से लौट आना है॥ किया व्यास के बचन का स्वामीजीने
अपमान। वेद और वेदांगका जिनको कहते हैं विद्वान्॥ कहा
मुक्तिको फांसी सम और कारागार समान, दयानन्दकी बुद्धि
पर छाया कैसा अज्ञान॥ पाप पुण्य जब दूर हुए तो फिर
शरीर क्यों पाना है। जो कहै मुक्ति से लौट आना जानो
उसको दीवाना है॥ ९॥ कर्म श्राद्ध पहले लिखा मृत पुरुषों

का आप। फिर किसने समझा दिया उलटा किया विलाप ॥ मुरदोंका श्राद्ध लिखा पहले फिर उसको गलत बताया है। ये खस कहो स्वामीजीके दिलमें किस तौर समाया है॥ जीवों की प्रथम उत्पत्ति लिखी पीछे अनादि कह गाया है। दावा था आलिम होनेका ये धोखा कैसे खाया है॥ श्राद्ध पहले मुरदों का बताया। पीछे उसको झूठा क्यों ठहराया॥ उत्पत्ति पहले जीवोंकी लिखी थी। मार्ग सीधा किसने फिर दिखाया ॥ १० ॥ गायत्रीके विषयमें गुरु का देख अज्ञान। लिखा कि चारों वेदमें है यह मन्त्र समान॥ चार वेदमें गायत्रीको दयानन्द बतलावें। अब अथर्वमें उनके चेले हमको आय दिखावें॥ पाठमात्रका वेद के उनको जो होता कुछ ज्ञान। तो अशुद्ध लिखते क्यों ऐसा समझें तो विद्वान्॥ मिले न जो उस वेद में ये तो फिर दिलमें शरमावें। ऐसे गुरुका पीछा छोड़ें जिस से लाज उठावें ॥११॥ लिखा मनुके नामसे मिथ्याही धीमान। विविध रत्न और स्वर्णका संन्यासीको दान॥ जब धन संग्रह में प्रीति बढ़ी झूठा ही श्लोक बनाया है। लें जान भृत्य जन सत्य उसे इससे मनुका बतलाया है॥ है नहीं मनुमें कहीं पता दिखलावे कोई विद्वान्। झूठी बातोंमें आजायें हम नहीं ऐसे अनजान॥ संन्यास धर्म का त्याग किया धनसेही स्नेह लगाया है। छल कपट किया स्वामी जी ने तब तो धन लाख कमाया है॥ स्वामीजीने धन से स्नेह लगाया। श्लोक झूठा मतलब का बनाया। कपट देखो कैसा ये किया है। वचन अपना मनु जी का बताया ॥ १२ ॥ टाइप का छापा, खुला

बढ़ा अधिक व्यापार। रोज़गार ऐसा कहां उठें एकके चार॥
लागत हो एक रुपये की और चार खुशी से उठ आवें। सौ
पचास धर्मार्थ भेंटके मास मासमें आजावें। हे प्यारे जी छपें
ग्रन्थ व्याकरण तो फिर चन्दा मगवाया। पांच हज़ारके नि-
कट द्रव्य दम भर में आया। ठहरें जिस रजवाड़े में वहां से
भी दो हजार पावें। शाल दुशाले ओढ़ें और फिर संन्यासी
ही कहलावें। पहले टुकड़े मांग मांग कर खाये? पीछे भोजन
मनमाने ही पाये॥ ऐश उनकी क़िसमत में लिखा था॥ देखो
यारो कैसे मजे उड़ाये॥ १३॥ रूपं रूपं यह वचन मुण्डकका
बतलाय। स्वामी जीने अज्ञता अपनी दी दिखलाय। है कहां
वचन ये मुण्डक में हमको आकर दिखलाये कोई। विद्या का
हुस्न जो रखता हो यारों के सन्मुख आये कोई॥ यहै मनु-
श्रुति छान्दोग्य की कहते हैं जो आप। दिखलाओ उपनिषद्
में हमको तब होंगे निष्पाप॥ है श्लोक कहां वह ग्रहण विषय
का शिरोमणी मंगवाय कोई। सत्य झूठकी करके परीक्षा
जी में तो शरमाय कोई॥ शर्म जिस को झूठ बातसे होवे।
ग्रन्थ झूठे गंगामें डुबोवे॥ त्याग झूठे गुरुका करके सम्यक्।
सत्यरूपी अमृतसे मुख धोवे। समित्पाणि श्रुति मांडूक्यमें
कहीं नहीं ले देख। दयानन्दके और भी ऐसे मिथ्या हैं बहु
लेख॥ १४॥ लिखा समाधिनिर्धूत इति वचन उपनिषद् प्र-
मान। सो भी दशमें हैं नहीं हंसे न क्यों विद्वान्॥ हैं दश उप-
निषद् प्रमान तुम्हें उनमें यह वचन देखाओ कहीं। स्वामी जी
को सच्चा जानो तो इसका पता लगाओ कहीं॥ नहिं सत्यात्

इस वचनको भी उपनिषद्में तुम बतलाओ कहीं। देखो अ- ज्ञान गुरूजीका अब तो दिलमें शरमाओ कहीं॥ अज्ञान देखो स्वामी जीका भाई। कथा जो कुछ गाई उलटी गाई॥ गलत् उनके ग्रन्थोंमें भरा है। अब तो यारो करलो कुछ सफाई॥१५॥ कहैं तदैक्षत श्रुतिको तैत्तिरीय की आप। वह उसमें कहीं है नहीं कहिये किसका पाप॥ ये पाप कहो लेखक का है या संन्यासी अज्ञानीका॥ अज्ञान शोधने वाले का या तेरे गुरु अभिमानी का। था स्वामी जीके शिर पर तो आवेश अवि- द्यारानीका। जो झूट बातका पक्ष करे है दोष उसीकी नानी का॥ १६॥ शारीरिक संक्षेप का जोवेशी यह श्लोक। दया- नन्दजीने लिखा महाशोक महाशोक। है महाशोक स्वामीजी ने जिस मतमें शिर मुंडवाया है। एक तुच्छ बात उस मतकी लिखी उसमें भी धोखा खाया है॥ शारीरक संक्षेप में हमको दो ये वचन दिखाय। नहीं पावें जो वहां तो पूछो गुरुसे अपने जाय। कहीं शारीरक भाष्यमें भी ये वचन मित्र नहीं आया है, बीड़ा क्यों झूठी बातोंका फिर तुमने वृथा उठाया है॥१७॥ है सत्यार्थप्रकाश में यह भी मिथ्या लेख। तान भागवत पर किया गुरुने तेरे देख॥ ले देख भागवतपर तेरे गुरुने जो दोष लगा- या है। वहां प्रकट अज्ञता को अपनी स्वामीजी ने दिखलाया है॥ प्रह्लाद भक्तकी कथामें जो लोहेका खम्भ बताया है। अग्नी में उसे तपाना और चिउंटीका चलना गाया है। है नहीं भाग- वत में प्यारे ये कहीं भी तीनों बात। ये ग्रंथ नहीं कुछ छिपा हुआ और कथा भी है विख्यात॥ १८॥ लिखा अक्रूर के चि-

षयमें जो आधा श्लोक। नहीं भागवतमें कहीं देखें सज्जन लोग। देखें सज्जन लोग जरा ये स्वामीजीकी माया है। मेह वृथा भागवत वाले पर दुर्वचनों का बरसाया है॥ चले अक्रूर मथुरा से जो करके कसद गोकुल का। फजर से शाम को पहुंचे दिखाओ ये लिखा हमको। थे सवार जिस रथमें वह चलता था वायु समान। दिखाओ यह कहां लिखा है हमको श्रीमान्। था सत्य असत्य का ज्ञान न कुछ जो जी में आया गाया है। स्वर तालकी कुछ भी खबर नहीं और फूटा ढोल बजाया है॥१६॥ शूद्रो ब्राह्मण० श्लोक से लिखा जो वर्ण विभाग। आशय मनु का आपने दिया सर्वथा त्याग॥ जो मनु ऋषिका आशय था वह स्वामी जी ने त्याग दिया। करके कपट वहां कपट मुनि ने अपना मतलब साध लिया॥ अनुलोम और प्रतिलोम विषय में है वहां यह श्लोक। देखें छल सन्यासी जी का सम्यक् सज्जन लोक॥ जानबूझ कर पोपराज ने अर्थ का देख अनर्थ किया। लिखा पुराण के वक्ता को और भांग का लोटा आप पिया॥२०॥ श्रीशंकर की मृत्यु का लिखा है जो अहवाल। जानो उसको सर्वथा स्वामी जी का जाल॥ ये जाल रचा स्वामीजी ने झूठा इतिहास बनाया है। दो जैनों ने विषयुक्त अन्न शंकर को कोई खिलाया है॥ फोड़े फुनसी निकले उनके और गई इसी में जान। यह कथा लिखी है कहां भला दिखलाये कोई विद्वान॥ स्यात् ऐसा हो स्वामी जीने नाम अपना यहां छुपाया है। कुछ हाल मृत्युका अपना ही चेलोंको प्रथम सुनाया है॥ जहर किसने शंकरको खिलाया। दोष झूठा जैनों

कोलगाया ॥ लिखा नहीं शंकरदिग्विजयमें । जानो इसको दया नन्द की माया॥२१॥ रचा सृष्टिकी आदिमें ब्रह्माको भगवान् । दिया वेदका हृदयमें उनके सम्यक् ज्ञान ॥ प्रथम वेद ब्रह्मा के मनमें ईश्वरने दरशाया है । पीछे और ऋषि मुनियोंने उन के द्वारा पाया है ॥ क्यों अग्नि वायुआदित्यका तुझ को छाया है अज्ञान । लिख वेदद्वार प्रकाशका उत्तर जो है कुछ अभिमान ॥ श्रीमन्मुन्शी इन्द्रमणीने उक्त ग्रन्थ छपवाया है । दयानन्दके अनृत कथन को अनृत कर दिखलाया है ॥ वेद प्रथम ब्रह्माजी पर आये । पीछे उनसे ऋषि मुनियोंने पाये ॥ धोखा बड़ा स्वामीजी ने खाया । गीत जो कुछ गाये उलटे गाये ॥२२ स्वर्ग नर्क सुख दुःखका माना तुमने नाम । है सत्शास्त्र विरुद्ध ये दयानन्द का काम ॥ मठवल्ली में स्वर्ग लोक का लक्षण खूब दिखाया है । है लोक विशेष स्वर्लोक यही शतपथ में भी दरशाया है । ले स्वर्ग सिद्धि को देख जरा मिल जाये सब अज्ञान । कर पक्षपात का त्याग बात जो सच है उसको मान । जो चढ़ा सत्यकी नौका पर स्वर्ग उसने निश्चय पाया है । है नरक लोक का बास उसे जिसने सचको झुठलाया है ॥२३॥ लिखा निषेध आप ही प्रथम शूद्र वर्ण को वेद । फिर उसके लिये की विधि हुआ परस्पर भेद ॥ यह दयानन्दकी बुद्धि है यहां कुछ गावें वहां कुछ गावें । कहीं लिखें घूमना पृथिवीका कहीं ध्रुवा उसीको बतलावें । उपवास किसी का सत्य नहीं सत्यार्थ में ये धोखा खावें । फिर तीन उपवास शिशुके लिये उपनयन कर्ममें फ़रमावें ॥२५॥ जिन कर्मों से मनुज के पाप

होंय सब नष्ट। निज ग्रन्थोंमें आपने लिखे वचन वे स्पष्ट। वे वचन स्पष्ट सब ग्रन्थोंमें स्वामीजीके ही आये हैं। श्रुतियोंका भाषा लिख २ कर सबको सम्यक् समझाये हैं। फिर सत्यार्थप्रकाश में क्या लिख बैठे यह वह आप। भोगे बिना छूट नहीं सकता कहीं कभी कोई पाप॥ दयानन्दकी बुद्धि ने कितनोंके धर्म मिटाये हैं। शतपथको तेरह तीन किया और कुपथ अनेक चलाये हैं॥२६॥ लिखा नाम परमात्माका नारायण आप। स्वामी जी का हो गया उदय कोई फिर पाप॥ होगया उदय फिर पाप कोई उसने यह पाप कराया है। नारायणनमः को उनसे वेद विरुद्ध लिखवाया है॥ है शोक लिखें इस परम मन्त्रको वेदविरुद्ध महाराज। पूर्ण हुआ सन्यास आपका तजो शर्म और लाज॥ लाज शर्मका त्याग किया मनमें आया सो गाया है। गाया क्या उलटा गीत हाय अमृतको विष ठहराया है॥२७॥ वेद भाष्यमें लिखचुके नमः शिवाय यह मन्त्र। फिर उसकी निन्दा लिखी ऐसे बने स्वतन्त्र॥ नमः शिवाय यह मन्त्र देख लो यजुर्वेद में आया है। स्वामी जी ने निन्दा उसकी करके क्यों पाप कमाया है॥ परमहंस ने परममन्त्र निन्दाको ही ठहराया है। सब ग्रन्थोंको झूंटा कहकर वेदोंपर हाथ चलाया है॥ भांग कैसी स्वामीजीने पी है। निन्दा देखो वेद वाक्यकी की है॥ धर्म जिसने उलटा सब चलाया। वह तो यारो कलियुग का ऋषि है॥ २८॥ करे आर्यावर्त्त में जो सब दिनसे वास। वही आर्य जो धर्म में निशि दिन करे प्रयास॥ जो करे प्रयास निज धर्म कर्ममें वही आर्य कहाता

है। पहिले लिख चुके ये स्वामीजी अब कलियुग उन्हें भ्रमाता हैं॥ ये लिखा आर्योंकी तिब्बतमें हुई प्रथम उत्पत्ति। वहां से बसे यहां आकर जब उन पर पड़ी विपत्ति। ये वचन अनार्य-कुलका दीपक गुरुको तेरे ठहराता है। जो तिब्बत में उत्पन्न हुए उनको अनार्य बतलाता है॥ दोष तूने शिष्योंको लगाया। अनार्य अपने वृद्धोंको बनाया॥ विरोध आया तेरे ही कथन में। अज्ञान कैसा बुद्धि पर ये छाया॥२९॥ स्वामीजी का लेख है करें विचार विद्वान्। विद्याका एक चिन्ह तुम लो जनेऊ को जान॥ यज्ञोपवीतको जो तुमने विद्याका चिन्ह बताता है तो आठ वर्षके बालकका फिर क्यों उपनयन कराया है॥ हे प्यारे जी होजाते विद्वान् तभी उपनयन कराते। न्यूनाधिक्य की और कोई पहचान बनाते॥ उस चिन्हको वस्त्रों के नीचे फिर तुमने वृथा छिपाया है। जो तमगा था ये विद्याका ऊ पर क्यों नहीं चमकाया है॥३०॥ पहले लिखा जो आपने सं न्यासीका धर्म। मेट दिया फिर क्यों उसे यह क्या किया कुकर्म॥ यह किया कुकर्म स्वामीजी ने संन्यास धर्मको छोड़ दिया। भोजन वस्त्र भोग धन संग्रहमें बुद्धि को जोड़दिया॥ पहले लिखा कि संन्यासी को धनका नहीं अधिकार। फिर स्वामीजी ने फहलाया लाखोंका व्यापार॥ वेद शास्त्रकी नि-न्दाकी और मुख सुमार्गसे मोड़ दिया। शिखाका छेदन कर-वाया यज्ञोपवीतको तोड़ दिया॥३१॥ स्वामीजी यह लिखचुके हैं सत्यार्थ प्रमान। शिखा सूत्र जिसके नहीं वह ईसाई समान ईसाई समान लिखा उसको जिसके नहीं शिखा सूत्र होवे।

दोनों से हीन थे स्वामी जी अब हंसे समाजी या रोवैं ॥ अपने ही लेखसे ठहरे वह देखो ईसाई समान । या मुसलमान की सदृश कहो जो है सत्यार्थ प्रमान ॥ ऐसे के पंथ में होकर क्यों कोई धर्म वृथा अपना खोवै । अनुयायि किसी का कभी न बनकर सत्य ग्रहण सुखसे सोवे ॥ आज्ञा शिखा छेदन की भी दी है । अशुद्धि कैसी गुरुने तेरे कीहै ॥ विरोध अपने लिखने में न सूझा । आज थारो गाढ़ी २ पी है ॥३२॥ स्वामीजी ने किस लिये किया जनेऊ का त्याग । इसका उत्तर है यही कहदो तुम बेलाग ॥ स्वामीजीने अपनेको जब विद्यासे खाली पाया है । विद्या का चिन्ह जो समझे थे इस से जनेऊ तुड़वाया है ॥ विना जनेऊ वाले को जब ईसाई समान बतलाया है । संन्यास दशामें त्याग उसका यह मिथ्या वचन सुनायाहै । निशाने इल्म है गर यह तो वतलादो किसलिये तादां । मुसलमां के बराबर उसके तारिकको लिखा तूने ॥३३॥ स्वामीजी ने वेद की शाखा ली जो मान । महा भाष्यसे चार का उसमें अन्तर जान । है चार का अन्तर उनमें भी स्वामीजी ने कैसी पी है । जो बात लिखी उसमें अवश्य कुछ ना कुछ गलतीही की है ॥ वह महाभाष्य का वचन लिखा स्वामीजी ने भी आप । देखो नामिक का पृष्ठ तीन खुल जाये उनका पाप ॥ हमको नहीं द्वेष किसीसे जरा जो बात थी सच सो लिखदी है, अब करो विचार हे मित्र तुम्हीं गुरुजी की बुद्धि कितनी है ॥३४॥ शंकर मतमें आपका था अहिले अनुराग । ग्रहण किया फिर द्वैतको करिके उसका त्याग ॥ त्याग दिया उसको निश्चय पर गन्ध

उसी की आती है। कहते हैं द्वैतवादी होकर ईश्वर का नहीं विजाती है॥ हे प्यारेजी द्वैत अद्वैतका तत्त्व कहो तुमने क्या जाना। प्रकृति जीवका भेद ब्रह्ममें जो नहीं माना॥ शिखासूत्र का त्याग किया है जिस मतमें महाराज। खण्डन करके उस का सम्यक फिर करो हो मण्डन-शाज॥ थी उरमें वसी अविद्या जो बुद्धि को वही भ्रमाती है। स्वामीजी को आकाशसे फिर पाताल हामें पहुंचाती है॥ गाई तुमने उलटीही प्रभाती, बने तुम तो शंकर के घराती॥ द्वैतवादी होकर यह न कहना नहीं कोई ईश्वरका विजाती॥३५॥ सृष्टिवर्षगत शेषकी लिखी व्यवस्था मूल। दो करोड़ से अधिक है स्वामी जी की भूल॥ है दो करोड़ से अधिक भूल क्या खूब हिसाब फहलाया है। लाख उनसठ बीसहजार पड़े तब लेखा पूरा पाया है॥ कर बैठे गवन करोरों का श्री स्वामी जी महाराज। दो चार हज़ार से होता है कहीं सिद्ध बड़ों का काज॥ पूछो जाकर स्वामी जी से किसने उनको बहकाया है। ये भूल है लिखने वालोंकी या आप ही धोखा खाया है॥३६॥ ईश्वरका आह्वान जब लिया स्वामीजी मान। उनके मत में हो गया परिच्छिन्न भगवान॥ परिच्छिन्न भगवान हुआ क्या उलटी बात बनाई है॥ पञ्चयज्ञ में परिक्रमाका ईश्वर की है विधान। परिच्छिन्न है मतमें तेरे निश्चय ही भगवान्॥ त्याग दिया सन्यास धर्म को धनसे प्रीति बढ़ाई है। परब्रह्मसे विमुख हुये सारी बुद्धि बौराई है॥ बुद्धि तेरे स्वामीजीकी बौराई। संन्यासी होकर धन से प्रीति बढ़ाई॥ दोष उसने ईश्वरको लगाया। है यह सारी कलियुग की प्रभुताई॥३७॥ स्वामीजीका देखिये और एक अ-

ज्ञान । शास्त्र विरुद्ध प्रत्यक्ष ही लिया उन्होंने मान ॥ निद्रा आलस्य दूर होय मार्जनका फल यह माना है । कफ पित्तकी शान्ति करता है आचमनका गुण ये जाना है ॥ दो काल होम जो करते हैं होती है वायु शुद्ध । ये कथन गुरूका तेरे मित्र है निश्चय शास्त्र विरुद्ध ॥ स्वामीजीको निज शिष्योंसे सब धर्म कर्म छुड़वाना है । होजाय अरुचि इन बातोंमें इससे यही ढोल बजाना है ॥३८॥ दयानन्दका लेख है तू निश्चय कर जान । स्त्री पुरुषोंके लिये है यही धर्म प्रमान ॥ द्विज कुलके स्त्री और पुरुष बस एकहि बार विवाह करें । मरजाय पति अथवा पत्नी तो फिर न विवाह की चाह करें ॥ क्यों करें समाजी पुनर्विवाह जो ये वेद विरुद्ध । जीमें ख्यात अपने जानते हों गुरुजीका लेख अशुद्ध ॥ ये लोग वृथा झूठी बातोंसे औरोंको गुमराह करें । ग्रन्थोंमें अपने लिखा है जो उसके विरुद्ध उत्साह करें ॥३६॥ ऋक्ष नदी पर्वत अही वृक्षादिक पर नाम । ऐसी कन्यासे नहीं उचित विवाहका काम ॥ ये लिखा तुम्हारे स्वामीने तुम सम्यक इसपर ध्यान करो । वरके ऐसी कन्याओंको मत गुरुजीका अपमान करो ॥ जो लिखा हो ऐसा वेदोंमें तो करो न वेद विरुद्ध । ये लिखा नहीं है वहां कहीं जानो सत्यार्थ अशुद्ध ॥ पढ़के सत्यार्थ समीक्षा को गुरु खण्डनका सामान करो । मैं हितकी कहता हूं तुमसे अब दूर अपना अज्ञान करो ॥ तुम दयानन्द के गीतों पर बस मत इतना अभिमान करो । खुलगई ढोलकी पोल वृथा स्वर ताल बिना क्यों गान करो ॥ मत भ्रष्ट करो नादानोंको इतना हम पर अहसान करो । कुछ बात करो

हमसे आकर अपनी मुशकिल आसान करो ॥ इस जहान से चलना है अब उस जहानका ज्ञान करो । यहांके सामान किये हैं बहुत कुछ वहांकाभी सामान करो ॥ हार जीतसे नहीं फायदा झूंठ सचकी पहचान करो । काम क्रोध मद लोभ छोड़ कर श्रीभगवतका ध्यान करो ॥४०॥ धर्म लोपके ग्रन्थमें है ये धर्म विधान । सब मनुष्य सब देशसे लो स्त्रीका दान । सब मनुष्य सब देशोंसे स्त्री लेना स्वीकार किया । कब मुसलमान ईसाईका स्वामीने तेरे विचार किया ॥ सब मनुष्य में आजाते हैं भंगी और चमार । उत्तम स्त्री लो उन से भी करो न कुछ तकरार ॥ दयानन्द ने हाय जगत् को कैसा भ्रष्टाचार किया । नहीं २ चेलोंका अपने बहुत बड़ा उपकार किया ॥४१॥ शूद्र वर्ण के हाथ का खा भोजन धीमान् । मान न तू मेरा कहा गुरुका कहना मान ॥ लिखा गुरुने तेरे कि भोजन घर में शूद्र पकावें । ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य सभी आनन्द से उस को खावें ॥ जो चेले पक्के हैं उन के इस रीति को चलावें । रोटी नाई धोबी से बनवा कर भोग लगावें ॥ जारी अब तो होटलका है खाना । सोडावाटर और बर्फ मंगवाना ॥ रोटी नाई धोबीसे कराओ । आया यारो कलियुगका जमाना ॥४२॥ संस्कार विधि का तेरी है यह साफ बयान । खाय भात जो मांससे जने पुत्र विद्वान् । वह जने पुत्र विद्वान् भातको मांस युक्त जो खावे । वेद और वेदांग पढ़े सुत विजय युद्धमें पावे॥ अजा मांस औ मांस तित्तिरी जिस बालकको खिलावै । अन्नादिक और विद्याकी सिद्धि उसकी हो जावे ॥ ४२ ॥ कढि

ने घुमकर हृदयमें हरा बुद्धि और ज्ञान। लिख बैठे सत्यार्थमें धर्म लोप धीमान॥ जो लड़के लड़की शूद्र सदृश हों उन्हें शूद्रको देदेवे। निज वर्ण समान लड़के लड़की उनके बदले में ले लेवें॥ शूद्र पुत्र और द्विज कन्याका हो जब मित्र विवाह। दयानन्दके चेलोंमें हो क्यों न अधिक उत्साह॥ जो समाज गण गुरु आज्ञा को तन मन से अब नहीं सेवे। स्वामीजी को जाने कच्चा और आंसू से दामन भेवे-॥ विद्या तेरे स्वामी की थी छोटी। बुद्धि तेरे स्वामी की थी मोटी॥ ज्ञान उनको था नहीं भले बुरे का। आज्ञा तेरे स्वामीकी है खोटी॥ ४४॥ दयानन्द की अज्ञता कहां तक करूं बयान। गऊ गधीको आप ने लिखा है एक समान॥ गऊ गधी को समान लिखा विद्वान् ने क्या ही विचार किया। बलदेव की माता रोहिणी थी उन को पत्नी ही सुमार किया। हाय २ माताको पत्नी लिख बैठे महाराज। विद्वानों को मुंह दिखलावें नहीं शर्म और लाज॥ हे प्यारेजी कुंभकर्ण की मूंछ एक योजन की बतलावें। तुलसीदासको दोष मृषा स्वामीजी लगावें॥ कालत्रय दर्शी ईश्वर को कहने से भी इनकार किया। जब पड़ी विपति स्वामीजी पर तो फिर इसका इकरार किया॥४५॥ सोमनाथके विषयमें लिखी है झूंठी बात। छोटे लड़के भी तुझे करदेंगे अब मात॥ मात मेरे सन्मुख तूने हरबात पै ऐ नादां खाया। दिखला तारीख में तब ये भी स्वामी ने तेरे जो फरमाया॥ चुम्बक की शिला लगी थी वहां ये कहां लिखा उसने पाया॥ थी अधर मूर्त्ति खड़ीहुई ये झूठ वृथा क्यों छपवाया। हे प्यारेजी हाथी

दांत की मूर्त्ति वहां साक्षी ने बताई ॥ दयानन्द के हृदय वही लोहे की समाई ॥ हिन्दू के बेटेको अब तक अज्ञान नहीं ऐसा छाया। शिवमूर्त्ति कहैं जो लोहेकी यह दयानन्द की है माया ॥४६॥ मिथ्या भाषण में अधिक था उनका अनुराग। सद्भाषण का भी किया स्वामीजीने त्याग ॥ कर दिया त्याग सद्भाषण का मिथ्या भाषण स्वीकार किया। दोष अपने लिखने का देखो औरों के शिर पर भार किया ॥ श्राद्ध तूने मुर्दोंका छपाया ॥ दोष झूठा लेखक को लगाया ॥ अशुद्धि निकली वाक्योंमें जो तेरे ॥ मूर्ख तूने चेले को बनाया ॥ हे प्यारेजी आप मृतक का श्राद्ध लिखा आपही छपवाया। फिर लेखक का दोष हाय उसको बतलाया ॥ वाक्य प्रबोध नाम से अपने छपवाकर तैयार किया। किन्तु हाय लेखकको फिर अपयश का भण्डार दिया ॥ ४७ ॥ दिव धातुको लिखकर गये उभयपदी श्रीमान्। वैय्याकरणी कौन है और ऐसा विद्वान् ॥ है कौन ऐसा विद्वान् उभयपदी दिवधातु को गावे। ये दयानन्द की शक्ति है जो फूटे ढोल बजावे। जो कोई समाजमें हो पंडित वह सन्मुख मेरे आवे ॥ किसी कोष (ग्रन्थ) में दिवधातु को उभयपदी दिखलावे। बुद्धि उसकी वाक्य प्रबोधने खोई। दशा कीहै दिवधातु ने सोई ॥ धर्म उसके हाथोंसे मिटा है। विद्या उसकी जड़ताई पै रोई ॥४८॥ जिस मतमें लाखों पुरुष वह झूठा नहिं होय। जो झूठा उसको कहै जानो झूठा सोय ॥ यह युक्ति तुम्हारे स्वामीकी अप-

ने ही घरका ढाता हूं। सब मतों को सच्चा ठहराकर इनको झूठा ठहराती हैं ॥ सब मतोंको झूठा कहा तेरे स्वामीने निश्चय जान। निज मतको सच्चा बतलाया अब समझ जरा धीमान। हैं मुसलमान ईसाई करोरों उनकी नींव जमाती है। स्वामीजी के मतकी जड़को पृथ्वीसे खोद गिराती है॥ युक्ति तेरी झूंठा तुझे बनावै। और सबको सच्चा ये ठहरावै ॥ बुद्धि तेरे स्वामीकी थी ऐसी। हंसी जिसपै विद्वानोंको आवै॥४९॥ थोड़ा भी जिस ग्रन्थमें लो असत्य तुम देख। छोड़ा उसका सत्यभी स्वामी जी का लेख॥ ये लेख देख स्वामी जी का सत्यार्थप्रकाश में आया है। हमने झूंठ उसके ग्रन्थों में सम्यक् तुझको दिखलाया है॥ जो लिखा है तेरे स्वामीने करदे उस सबका त्याग। ले जान समान विषकी उसको मतकर विषमें अनुराग॥ सत्यार्थप्रकाशका झूंठ तेरे स्वामीही को मनभाया है। पहले जो उसने छपवाया पीछे फिर आप मिटाया है॥ हे प्यारेजी सत्य असत्यका भेद तेरे गुरुने नहीं पाया। लिखा असत्यको सत्य सत्यको अनृत बताया॥ तरदीदमें तेरे स्वामीजी की जब हमने कलम उठाया है। एक २ बातके खण्डन में ग्रन्थ एक २ छपवाया है॥५०॥ दयानन्द महाराजने दिया हुक्म यह आप। करो नमस्ते परस्पर जब २ होय मिलाप॥ ये मन्त्र नमस्ते दयानन्दने शिष्योंको क्या सिखलाया। निज कपोल कल्पित ढकोसला शास्त्र विरुद्ध चलाया॥ श्रीइन्द्रमणीसे बार २ इस बात पै मात उसने खाया। मंगलदेव पराजयमें हमने भी खण्डन छपवाया॥ ५१॥ तेरे गुरुके लेखपर

क्यों न हंसे विद्वान् । ले सत्यार्थप्रकाशमें देख उसका अज्ञान सत्यार्थप्रकाश ये ग्रन्थ मित्र अज्ञान अधर्म की खानि है । तू जान यथार्थ यह वचन मेरा सद्धर्म की इससे हानि है ॥ हे प्यारेजो मैंने इसके दोष तुम्हें सम्यक् समझाये । देख ढाक के फूल वृथा तुम क्यों इतराये । गोवध तक जिसने लिखा हाय कौन उससा और अज्ञानी है । इस मतमें जो कोई फंसे यार बेशक उसकी नादानी है ॥५२॥ केवल तुमको संहिता हैं प्रमाण जो चार । तो अपने मन्तव्य को करो वेद अनुसार ॥ चार संहितामें संध्याकी आज्ञा हमको दिखलाओ । जो क्रिया लिखी जिन मन्त्रोंसे विस्तार सहित वह बतलाओ ॥ है गोत्र सपिण्डका दार कर्ममें त्याग कहां ये फरमाओ । बलिवैश्वदेव की पूर्णविधि वेदोंसे सम्यक् समझाओ ॥ संस्कार सोलहको सम्यक् करो वेदसे सिद्ध । आठ प्रमाणका लक्षण कहिये हैं वह कहां प्रसिद्ध ॥ जो कुछ तुमने धर्माधर्म पहिचाना । वह सब हमको वेदोंमें दिखाना ॥ बात झूंठी जो कुछ यहां बनाई । तो फिर होगा और अधिक पछताना ॥५३॥ नागवेद निधि चंद्रमा विक्रमाब्द पहिचान । ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी पूर्त्ति ग्रन्थ की जान ॥ होगया पूर्ण यह ग्रन्थ भी अब जो दयानन्दकी लीला है । जिस दिनसे पुस्तक छपै मेरे हाल आर्यसमाजका ढीला है ॥ जो गाली देते फिरते थे अब उनका भी मुख पीला है । भय नहीं किसीसे जगन्नाथ भगवत्का जिसे वसीला है ॥५२॥

॥ इति ॥